अध्याय 8: रैदास के पद

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 19 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)	6 प्रश्न
प्रश्नावली 8.2	अर्थ और भाव	2 प्रश्न
प्रश्नावली 8.3	मेरी समझ मेरे विचार	3 प्रश्न
प्रश्नावली 8.4	कविता की कुछ अन्य विशेषताएँ (तालिका)	4 प्रश्न
प्रश्नावली 8.5	विषयों से संवाद	2 प्रश्न
प्रश्नावली 8.6	व्याकरण की बात — शब्दों की बात	2 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)

प्रश्न 1

"अब कैसे छूटै राम रट लागी" पंक्ति का भाव है? (क) नाम उच्चारण की कठिनाई (ख) नाम रटकर याद करना (ग) आराध्य का नाम जपना (घ) मित्रों का नाम रटना

हल

सही उत्तर: (ग) आराध्य का नाम जपना।

यह पंक्ति पद की पहली पंक्ति है। 'राम रट लागी' का अर्थ है — राम (आराध्य) का नाम निरंतर जप में लग जाना। 'छूटना' यहाँ इस भाव को व्यक्त करता है कि यह लगन अब छूटती नहीं — अर्थात भक्त इस भक्ति में इतना डूब गया है कि आराध्य का नाम-जप उसका स्वभाव बन गया है।

विकल्प (क), (ख) और (घ) गलत हैं क्योंकि यह पंक्ति 'नाम रटने की कठिनाई' या 'मित्रों के नाम' के बारे में नहीं, बल्कि आराध्य के प्रति अनन्य भक्ति-भाव के बारे में है।

उत्तर: (ग) आराध्य का नाम जपना — रैदास के लिए राम-नाम-जप एक ऐसी गहरी लगन बन गई है जो अब छूटती नहीं।

प्रश्न 2

"प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" पंक्ति में आराध्य और भक्त का संबंध किस रूप में व्यक्त हुआ है? (क) एकाकार और समरूप (ख) तरल और तीव्र सुगंध (ग) आश्रय और आश्रित (घ) द्रव और ठोस

हल

सही उत्तर: (क) एकाकार और समरूप।

चंदन को जब पानी में घिसा जाता है तो चंदन की सुगंध और गुण पानी में पूरी तरह समा जाते हैं — दोनों एकाकार हो जाते हैं।

रैदास यहाँ कह रहे हैं कि आराध्य (चंदन) और भक्त (पानी) का संबंध ऐसा है जिसमें दोनों एक-दूसरे में घुल-मिलकर एकाकार हो जाते हैं।

विकल्प (ग) 'आश्रय और आश्रित' भी आंशिक रूप से सही लग सकता है, लेकिन पंक्ति का मूल भाव 'एकाकार होने' का है, न केवल निर्भरता का।

उत्तर: (क) एकाकार और समरूप — चंदन-पानी की भाँति आराध्य और भक्त एक-दूसरे में घुलकर अभिन्न हो जाते हैं।

प्रश्न 3

"तुम दीपक, हम बाती" से रैदास का क्या भाव है? (क) दीपक और बाती का कोई मेल नहीं होता है। (ख) दीपक बिना बाती भी जल सकता है। (ग) भक्त आराध्य से अधिक महत्वपूर्ण है। (घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।

हल

सही उत्तर: (घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।

पद में रैदास कहते हैं — 'प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।'

दीपक और बाती मिलकर प्रकाश देते हैं — न दीपक बिना बाती जल सकता है, न बाती बिना दीपक का कोई अर्थ है। दोनों का मिलन ही ज्योति जलाता है।

यह ज्योति दिन-रात जलती रहती है — अर्थात आराध्य और भक्त का मिलन जीवन को सदा प्रकाशित करता है।

उत्तर: (घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है — दीपक-बाती मिलकर ही अखंड ज्योति जलाते हैं।

प्रश्न 4

"जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ" पंक्ति में रैदास का क्या आशय है? (क) परोपकारी भक्ति भाव (ख) आराध्य से अटूट संबंध (ग) सांसारिक मोह (घ) कर्मकांड पर बल

हल

सही उत्तर: (ख) आराध्य से अटूट संबंध।

रैदास कहते हैं — 'जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।'

अर्थ: यदि आराध्य भी संबंध तोड़ लें, तो भी मैं (भक्त) संबंध नहीं तोडूँगा — क्योंकि आराध्य को छोड़कर मैं किससे जुडूँगा?

यह पंक्ति भक्त की एकनिष्ठ, अटूट भक्ति को व्यक्त करती है — जो सांसारिक मोह या कर्मकांड से बिल्कुल भिन्न है।

उत्तर: (ख) आराध्य से अटूट संबंध — रैदास की आराध्य के प्रति इतनी गहरी निष्ठा है कि आराध्य के संबंध तोड़ने पर भी वे संबंध नहीं तोड़ेंगे।

प्रश्न 5

"तीरथ बरत न करूँ अंदेसा" पंक्ति से आप क्या समझते हैं? (क) तीर्थ और व्रत आवश्यक नहीं हैं। (ख) तीर्थ और व्रत सब आवश्यक हैं। (ग) तीर्थ जाने से मुक्ति निश्चित है। (घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।

हल

सही उत्तर: (घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।

पंक्ति का पूरा रूप है: 'तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।'

'अंदेसा' का अर्थ है चिंता, शक या आशंका। रैदास कह रहे हैं — तीर्थ और व्रत न करने की मुझे कोई चिंता नहीं, क्योंकि मेरा एकमात्र भरोसा (सहारा) आपके चरण-कमल हैं।

यह केवल तीर्थ-व्रत की अनावश्यकता का कथन नहीं (विकल्प क), बल्कि सकारात्मक रूप से यह कह रहा है कि आराध्य के चरणों में ही सच्चा आश्रय है।

उत्तर: (घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है — रैदास को तीर्थ-व्रत की चिंता इसलिए नहीं कि प्रभु-चरण ही उनका एकमात्र भरोसा हैं।

प्रश्न 6

सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा किस पंक्ति में व्यक्त होती है? (क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा" (ख) "जाकी जोति बरै दिन राती" (ग) "तुम दीपक, हम बाती" (घ) "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा"

हल

सही उत्तर: (क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा"।

पंक्ति का पूरा रूप है: 'जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा, तुम सा देव ओर नहिं दूजा।'

अर्थ: जहाँ-जहाँ भी (भक्त) जाता है, वहाँ-वहाँ ईश्वर की पूजा होती है। इस पंक्ति में ईश्वर की सर्वव्यापकता का भाव स्पष्ट है — वे किसी एक स्थान तक सीमित नहीं।

अन्य विकल्प ईश्वर की अन्य विशेषताओं (अखंड प्रकाश, भक्त-आराध्य संबंध, तीर्थ की अनावश्यकता) को व्यक्त करते हैं, सर्वव्यापकता को नहीं।

उत्तर: (क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा" — यह पंक्ति ईश्वर की सर्वव्यापकता को व्यक्त करती है; वे हर जगह विद्यमान हैं।

प्रश्नावली 8.2 — अर्थ और भाव

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्ति का अर्थ समझाते हुए भाव स्पष्ट कीजिए: "प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"

हल

शब्दार्थ: घन = बादल/मेघ; मोरा = मोर; चितवत = देखना, निहारना; चंद = चंद्रमा; चकोरा = चकोर पक्षी (जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है)।

अर्थ: हे प्रभु! आप घने बादल हैं और हम मोर हैं — जैसे मोर बादल देखकर मुग्ध हो नाचने लगता है, वैसे ही हम भी आपको देखकर आनंदित होते हैं। इसके साथ ही, आप चंद्रमा हैं और हम चकोर — जैसे चकोर पक्षी चंद्रमा को एकटक निहारता रहता है, वैसे ही हम आपको।

भाव: इस पंक्ति में रैदास ने दो उपमाओं — घन-मोर और चंद्र-चकोर — के माध्यम से भक्त और आराध्य के बीच गहरे प्रेम और आकर्षण को व्यक्त किया है।

मोर जैसे बादल देखकर प्रसन्न हो जाता है और चकोर जैसे रात भर चंद्रमा को निहारता रहता है, उसी प्रकार भक्त भी आराध्य के दर्शन के लिए सदा व्याकुल और प्रेमासक्त रहता है।

यह पंक्ति अनन्य भक्ति और आराध्य के प्रति एकनिष्ठ प्रेम का सुंदर चित्रण है।

उत्तर: आराध्य घने बादल और चंद्रमा हैं, भक्त मोर और चकोर — जैसे मोर बादल देख प्रसन्न होता है और चकोर चंद्रमा को एकटक निहारता है, वैसे ही भक्त सदा आराध्य की ओर आकृष्ट और प्रेमासक्त रहता है।

प्रश्न 2

नीचे दी गई पंक्ति का अर्थ समझाते हुए भाव स्पष्ट कीजिए: "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"

हल

शब्दार्थ: तीरथ = तीर्थ (काशी, प्रयाग आदि पुण्य क्षेत्र); बरत = व्रत; अंदेसा = चिंता, आशंका, शक; चरन कमल = कमल के समान चरण; भरोसां = विश्वास, भरोसा, सहारा।

अर्थ: रैदास कहते हैं — तीर्थ यात्रा न करने और व्रत न रखने की मुझे कोई चिंता नहीं है, क्योंकि आपके चरण-कमलों पर ही मेरा एकमात्र भरोसा है।

भाव: इस पंक्ति में रैदास ने बाह्य धार्मिक आडंबरों (तीर्थ, व्रत, कर्मकांड) की तुलना में आंतरिक भक्ति और आराध्य के प्रति समर्पण को श्रेष्ठ माना है।

उनका मानना है कि जिसने प्रभु के चरणों में अपना विश्वास रख दिया, उसे किसी बाहरी साधन की आवश्यकता नहीं रहती।

यह संत काव्य की उस धारा का प्रतिनिधित्व करती है जो निर्गुण भक्ति और अंतःकरण की शुद्धता को धर्म का आधार मानती है।

उत्तर: रैदास कहते हैं कि तीर्थ-व्रत न करने की उन्हें कोई चिंता नहीं, क्योंकि उनका एकमात्र भरोसा प्रभु के चरण-कमलों पर है — बाह्य कर्मकांड से श्रेष्ठ है आंतरिक भक्ति और समर्पण।

प्रश्नावली 8.3 — मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1

"जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ" पंक्ति में रैदास की अपने आराध्य में अटूट निष्ठा का भाव है। इससे आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

हल

पंक्ति का पूरा रूप: 'जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।'
शाब्दिक अर्थ: यदि आप (आराध्य) भी मुझसे संबंध तोड़ लें, तो भी मैं (भक्त) संबंध नहीं तोडूँगा — क्योंकि आपसे संबंध तोड़कर मैं किससे जुड़ूँगा?
इस पंक्ति में रैदास की एकनिष्ठ, अविचल और अटूट भक्ति का भाव व्यक्त होता है।
यह भक्ति शर्त-रहित है — भक्त यहाँ अपेक्षा नहीं रखता कि आराध्य उसे कुछ देगा या उसके साथ रहेगा; वह तो बस प्रेम के आधार पर बँधा है।
यह पंक्ति हमें सिखाती है कि सच्ची निष्ठा और प्रेम एकतरफा नहीं होता — वह परस्पर निर्भर नहीं, बल्कि आंतरिक और स्वतंत्र होता है।
रैदास का यह भाव उस समाज में विशेष महत्त्व रखता है जहाँ भक्ति को स्वार्थ या मोक्ष-लाभ के लिए साधन माना जाता था। रैदास भक्ति को ही जीवन का उद्देश्य मानते हैं।

उत्तर: रैदास की अटूट निष्ठा इसमें है कि चाहे आराध्य स्वयं संबंध तोड़ लें, तब भी वे नहीं तोड़ेंगे — क्योंकि आराध्य के अलावा कोई और आश्रय नहीं। यह शर्त-रहित, एकनिष्ठ भक्ति है।

प्रश्न 2

रैदास ने तीर्थ और व्रत के स्थान पर किस साधन को भक्ति का प्रमुख आधार माना है? आपके विचार से भक्ति के क्या आधार हो सकते हैं?

हल

रैदास ने तीर्थ और व्रत के स्थान पर आराध्य के चरण-कमलों में अटूट भरोसे और प्रेमपूर्ण भक्ति को भक्ति का प्रमुख आधार माना है।
उनके अनुसार बाह्य आडंबर (तीर्थाटन, व्रत, कर्मकांड) से ईश्वर-प्राप्ति नहीं होती — आंतरिक श्रद्धा और प्रेम-भाव ही सच्ची भक्ति है।
पद की पंक्ति 'तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां' इसी भाव को व्यक्त करती है।
अपने विचार से भक्ति के आधार:
— मन की शुद्धता और सच्चाई: मन में कोई कपट या स्वार्थ न हो।
— प्रेम और समर्पण: आराध्य के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और पूर्ण समर्पण।
— निरंतरता: भक्ति केवल तीज-त्योहारों तक सीमित न हो, बल्कि 'सबही पहर' (हर समय) हो।
— सेवा: दूसरों की सेवा में ईश्वर को देखना — 'मन क्रम वचन' से।

उत्तर: रैदास ने आराध्य के चरण-कमलों में अटूट भरोसे और आंतरिक प्रेम-भाव को भक्ति का प्रमुख आधार माना। सच्ची भक्ति के आधार हैं — मन की शुद्धता, निःस्वार्थ प्रेम, समर्पण और निरंतर स्मरण।

प्रश्न 3

दोनों पदों में भक्त और आराध्य के संबंध को किन-किन प्रतीकों/उपमाओं से व्यक्त किया गया है? लिखिए।

हल

प्रथम पद में प्रतीक/उपमाएँ:

1. चंदन-पानी: प्रभु चंदन हैं, भक्त पानी — जैसे पानी में चंदन घुलकर उसे सुगंधित कर देता है, वैसे ही भक्त आराध्य की सुगंध में रंग जाता है।
2. घन-मोर (बादल-मोर) और चंद्र-चकोर: प्रभु बादल और चंद्रमा हैं, भक्त मोर और चकोर — आकर्षण और प्रेम का प्रतीक।
3. दीपक-बाती: प्रभु दीपक हैं, भक्त बाती — दोनों के मिलन से ज्योति जलती है।
4. मोती-धागा: प्रभु मोती हैं, भक्त धागा — जैसे धागे में मोती पिरोए जाते हैं।
5. सोने-सुहागा: जैसे सोने में सुहागा मिलकर उसे शुद्ध और चमकदार बनाता है — यह दोनों के संयोग की पवित्रता का प्रतीक है।
6. स्वामी-दासा: प्रभु स्वामी हैं, रैदास दास — भक्ति-भाव का परम समर्पण।

द्वितीय पद में प्रतीक/उपमा:

7. चरन कमल: ईश्वर के चरण को कमल की उपमा — पवित्रता और आश्रय का प्रतीक।

उत्तर: दोनों पदों में चंदन-पानी, घन-मोर, चंद्र-चकोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, सोने-सुहागा, स्वामी-दास और चरन-कमल — इन सात प्रतीकों/उपमाओं से भक्त और आराध्य के अटूट, एकाकार संबंध को व्यक्त किया गया है।

प्रश्नावली 8.4 — कविता की कुछ अन्य विशेषताएँ (तालिका)

प्रश्न 1

नीचे दी गई सूची में रैदास के दोनों पदों से कुछ विशेषताएँ चुनकर दी गई हैं। पदों में से चुनकर इन विशेषताओं को दर्शाती पंक्तियाँ लिखिए। विशेषता: अनन्य भक्ति भाव (उदाहरण दिया गया है: "जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।") विशेषता: सरल और लोकधर्मी भाषा

हल

विशेषता: सरल और लोकधर्मी भाषा
उदाहरण पंक्ति: "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।"
स्पष्टीकरण: रैदास ने सरल ब्रजभाषा में लोक-प्रचलित प्रतीकों (चंदन-पानी, दीपक-बाती आदि) का प्रयोग किया है जिन्हें आम जनता आसानी से समझ सके। यह पंक्ति इसी सरल, लोकधर्मी भाषा का प्रमाण है।

उत्तर: सरल और लोकधर्मी भाषा — "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।" (रैदास ने लोक-परिचित प्रतीकों में भक्ति को सरल ब्रजभाषा में व्यक्त किया।)

प्रश्न 2

पदों में से चुनकर इस विशेषता को दर्शाती पंक्ति लिखिए: विशेषता: उपमा और तुलना

हल

विशेषता: उपमा और तुलना
उदाहरण पंक्ति: "प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"
स्पष्टीकरण: यहाँ दो-दो उपमाएँ एक साथ प्रयुक्त हुई हैं — प्रभु को बादल से और भक्त को मोर से, तथा प्रभु को चंद्रमा से और भक्त को चकोर से तुलना की गई है। 'जैसे' शब्द उपमा का बोधक है।

उत्तर: उपमा और तुलना — "प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।" (यहाँ बादल-मोर और चंद्र-चकोर की दोहरी उपमा से भक्त-आराध्य के प्रेम को व्यक्त किया है।)

प्रश्न 3

पदों में से चुनकर इस विशेषता को दर्शाती पंक्ति लिखिए: विशेषता: लयात्मकता और गेयता/ध्वन्यात्मकता

हल

विशेषता: लयात्मकता और गेयता/ध्वन्यात्मकता
उदाहरण पंक्ति: "अब कैसे छूटै राम रट लागी।" / "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।"
स्पष्टीकरण: रैदास के पद गेय हैं। प्रत्येक पंक्ति में तुकबंदी (पानी-समानी, मोरा-चकोरा, बाती-राती, धागा-सुहागा, दासा-रैदासा) और लय है जो इन्हें गाने योग्य बनाती है।
इसके अलावा: "सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।" — में भी स्पष्ट लय और गेयता है।

उत्तर: लयात्मकता और गेयता — "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।" (तुकबंदी: पानी-समानी, मोरा-चकोरा, बाती-राती — प्रत्येक पंक्ति में लय और ध्वनि-सौंदर्य है।)

प्रश्न 4

पदों में से चुनकर इस विशेषता को दर्शाती पंक्ति लिखिए: विशेषता: दृढ़ निष्ठा और आस्था

हल

विशेषता: दृढ़ निष्ठा और आस्था

उदाहरण पंक्ति: "सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।"

स्पष्टीकरण: 'सबही पहर' अर्थात हर समय (प्रहर), 'मन क्रम वचन' अर्थात मन से, कर्म से और वचन से — तीनों स्तरों पर आराध्य में निष्ठा रखना दृढ़ आस्था का प्रमाण है।

इसके अतिरिक्त: "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।" — भी दृढ़ निष्ठा और अडिग आस्था को दर्शाती है।

उत्तर: दृढ़ निष्ठा और आस्था — "सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।" (हर समय, मन-कर्म-वचन तीनों से आराध्य में आस्था — यही अडिग निष्ठा है।)

प्रश्नावली 8.5 — विषयों से संवाद

प्रश्न 1

तीर्थ और व्रत के स्थान पर रैदास ने आराध्य की भक्ति को प्रधान माना है। भक्तिकाल के कवि रैदास की तरह कबीर भी निराकार आराध्य की भक्ति पर बल देते हैं। तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर बताइए कि इसके क्या कारण हो सकते हैं? (संकेत: आप अपने सामाजिक विज्ञान के शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।)

हल

रैदास और कबीर दोनों भक्तिकाल (14वीं–16वीं शताब्दी) के संत कवि थे। इस काल की प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ निम्नलिखित थीं:

1. जाति-व्यवस्था की कठोरता: उस समय समाज में ऊँच-नीच की खाई बहुत गहरी थी। रैदास स्वयं 'चमार' जाति से थे और मंदिरों में प्रवेश वर्जित था। निराकार भक्ति में कोई जाति-भेद नहीं — हर कोई सीधे ईश्वर से जुड़ सकता है।
2. कर्मकांड और पुरोहित-वर्ग का वर्चस्व: तत्कालीन धर्म में तीर्थ, यज्ञ, व्रत और अनुष्ठानों का बोलबाला था। पुरोहित वर्ग इन्हें नियंत्रित करता था। संत कवियों ने बाह्य आडंबर के विरुद्ध आंतरिक भक्ति को महत्त्व दिया।
3. इस्लाम का प्रभाव: इस्लाम के एकेश्वरवाद (एकमात्र निराकार ईश्वर) के संपर्क में आने से कुछ संत कवियों ने निर्गुण-निराकार ईश्वर की अवधारणा को अपनाया।
4. सामाजिक समरसता की आवश्यकता: निराकार भक्ति सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है — उसमें न मंदिर चाहिए, न पुरोहित, न ऊँची जाति। इससे सामाजिक समानता का संदेश मिलता था।
5. अनुभव-आधारित आध्यात्मिकता: संत कवियों का मानना था कि ईश्वर तीर्थ में नहीं, मन की शुद्धता में मिलते हैं।

उत्तर: रैदास और कबीर ने निराकार भक्ति पर इसलिए बल दिया क्योंकि — जाति-व्यवस्था की जकड़न में निराकार भक्ति सबके लिए समान थी; कर्मकांड पर पुरोहित वर्ग का वर्चस्व था जिसका वे विरोध करते थे; और आंतरिक शुद्धता को ही सच्चा धर्म मानते थे।

प्रश्न 2

"सोने मिलत सुहागा" — 'सुहागा' एक प्राकृतिक खनिज है जिसके प्रयोग से सोने की अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और उसकी चमक बढ़ जाती है। 'सुहागा' का रासायनिक नाम और उसकी विशेषताएँ अपने विज्ञान के शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।

हल

सुहागा का रासायनिक नाम: सोडियम टेट्राबोरेट (Sodium Tetraborate) अथवा बोरेक्स (Borax)।
रासायनिक सूत्र: $Na_2B_4O_7 \cdot 10H_2O$ (सोडियम टेट्राबोरेट डेकाहाइड्रेट)।
सुहागा की प्रमुख विशेषताएँ:
— यह एक सफेद, क्रिस्टलीय प्राकृतिक खनिज है जो बोरॉन का यौगिक है।
— धातुकर्म में सुहागा 'फ्लक्स' (Flux) के रूप में काम करता है — यह धातुओं की सतह पर जमी ऑक्साइड परत को हटाकर उन्हें शुद्ध करता है।
— सोने में सुहागा मिलाने पर सोने की अशुद्धियाँ (जैसे ऑक्साइड) सुहागे के साथ मिलकर अलग हो जाती हैं और

सोना अधिक चमकदार व शुद्ध हो जाता है।

— सुहागा का उपयोग कपड़े धोने, औषधि, काँच-निर्माण और सोने-चाँदी के आभूषण बनाने में भी होता है।

काव्य में प्रयोग: रैदास ने 'सोने मिलत सुहागा' की उपमा से यह भाव व्यक्त किया है कि जैसे सुहागा सोने को शुद्ध और उज्ज्वल बनाता है, वैसे ही आराध्य का सान्निध्य भक्त को शुद्ध और दीप्त कर देता है।

उत्तर: सुहागा का रासायनिक नाम सोडियम टेट्राबोरेट (बोरेक्स, $Na_2B_4O_7 \cdot 10H_2O$) है। यह फ्लक्स का कार्य करता है — सोने की ऑक्साइड अशुद्धियाँ हटाकर उसे शुद्ध और चमकदार बनाता है। रैदास ने इसी से भक्त पर आराध्य के शुद्धिकारी प्रभाव की उपमा दी है।

प्रश्नावली 8.6 — व्याकरण की बात — शब्दों की बात

प्रश्न 1

पठित पदों में से संज्ञा और सर्वनाम के तीन-तीन उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

हल

संज्ञा के तीन उदाहरण (पदों से):
1. चंदन (जातिवाचक संज्ञा) — 'प्रभु जी तुम चंदन हम पानी'
2. तीरथ (स्थानवाचक/जातिवाचक संज्ञा) — 'तीरथ बरत न करूँ अंदेसा'
3. राम (व्यक्तिवाचक संज्ञा, आराध्य का नाम) — 'अब कैसे छूटै राम रट लागी'

(अन्य संज्ञाएँ: दीपक, बाती, मोती, धागा, चकोरा, मोरा, भगति, दासा, चरन कमल आदि)

सर्वनाम के तीन उदाहरण (पदों से):
1. तुम — 'प्रभु जी तुम चंदन हम पानी' (आराध्य के लिए — मध्यम पुरुष सर्वनाम)
2. हम — 'प्रभु जी तुम चंदन हम पानी' (भक्त/रैदास के लिए — उत्तम पुरुष सर्वनाम)
3. मैं — 'जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ' (उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम)

(अन्य सर्वनाम: जाकी, सौं, जहँ आदि)

उत्तर: संज्ञा — चंदन, तीरथ, राम (और दीपक, बाती, चकोरा आदि)। सर्वनाम — तुम (आराध्य के लिए), हम (भक्त के लिए), मैं ('जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ' में)।

प्रश्न 2

रैदास के इन दोनों पदों में बहुत से ऐसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं जिनके स्थान पर अन्य शब्दों का प्रयोग होता है। नीचे सूची में दिए गए शब्दों को देखिए। आप या आपके आस-पास के लोग इन शब्दों के लिए किन अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं? लिखिए। शब्द: मोरा, चकोरा, बाती, राती, सोने, तीरथ, बरत

हल

1. मोरा (ब्रजभाषा) → आधुनिक हिंदी में: मोर (मयूर)
2. चकोरा (ब्रजभाषा) → आधुनिक हिंदी में: चकोर (एक पक्षी जो चंद्रमा का प्रेमी माना जाता है)
3. बाती (ब्रज/लोकभाषा) → आधुनिक हिंदी में: बत्ती (दीये की बाती, बत्ती); अंग्रेज़ी प्रभाव में: बल्ब या विक (wick)
4. राती (ब्रजभाषा) → आधुनिक हिंदी में: रात (रात्रि)
5. सोने (यहाँ ब्रज में सोना धातु के लिए) → आधुनिक हिंदी में: सोना (स्वर्ण, कनक)
6. तीरथ (ब्रज/लोकभाषा) → आधुनिक हिंदी में: तीर्थ (पुण्य स्थान, धाम)
7. बरत (ब्रज/लोकभाषा) → आधुनिक हिंदी में: व्रत (उपवास, रोज़ा)

उत्तर: मोरा→मोर, चकोरा→चकोर, बाती→बत्ती/बाती, राती→रात, सोने→सोना (स्वर्ण), तीरथ→तीर्थ, बरत→व्रत। ये ब्रज/लोकभाषा के शब्द हैं जिनके आधुनिक हिंदी रूप भिन्न हैं।